बढ़ती जा रही हैं गैस पीड़ितों की स्वास्थ्य समस्याएं

भारत डोगरा

भोपाल गैस त्रासदी के 27 वर्ष बीत जाने के बाद भी आज स्थिति यह है कि ज़हरीली गैस से प्रभावित लोगों की समस्याएं कम नहीं हो रही हैं अपितु बढ़ ही रही हैं। इसकी एक वजह तो यह है कि ज़हरीली गैस का असर बहुत दीर्घकालीन सिद्ध हुआ है। दूसरी वजह यह है कि काफी खर्च से खड़ा किया गया चिकित्सा तंत्र सफल नहीं रहा है। एक अन्य कारण यह भी है कि गैस त्रासदी का असर नई पीढ़ी तक भी पहुंच रहा है यानी गैस त्रासदी के बाद पैदा हुए कई बच्चों में भी ज़हरीली गैस के दुष्परिणामों से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याएं नज़र आ रही हैं।

हाल ही में, मई के अंत में भोपाल की गैस प्रभावित बस्ती जेपी नगर में अनेक गैस-प्रभावित परिवारों से बातचीत करने पर यह स्थिति स्पष्ट हुई कि कुछ संदर्भों में तो गैस पीड़ित परिवारों की समस्याएं और बढ़ रही हैं।

उदाहरण के लिए 39 वर्षीय संजय यादव का परिवार लें। संजय ने 27 वर्ष तक गैस के दुष्परिणामों को खूब झेला है। आंखों में जलन, सीने में जलन से परेशान रहते हैं। बहुत कम चल-फिर सकते हैं या मेहनत कर पाते हैं, तो भी हिम्मत से उन्होंने परिवार की रोज़ी-रोटी संभाली हुई है। उनकी पत्नी शारदा भी गैस-प्रभावित परिवार से है। आंखों की जलन व सिरदर्द से पीड़ित हैं, साथ ही नाक से खून आता है।

संजय और शारदा के दो बेटे विकास और अमन 5 से 10 वर्ष की आयु के है। गैस का कहर इन पर भी पड़ा है। वे बचपन से ही शारीरिक व मानसिक दोनों स्तरों पर विकलांग है। विकास ने बहुत कठिनाई से मुस्कराकर अपना नाम बताया। उन्हें गोदी में उठाकर परिवार के लोग इधर-उधर ले जाते हैं और शौच आदि करवाते हैं।

संजय के पिता पन्नालाल ने कई स्वास्थ्य समस्याएं झेली हैं, अब पस्त होकर बिस्तर पर पड़े हैं। संजय की मां ओमवती को गले में छाले हैं जिसके कारण भोजन निगलने में बहुत कठिनाई होती है। डॉक्टरों ने कहा है कि कैंसर की संभावना की जांच करनी होगी। शरीर पर चकते हो जाते हैं जिनमें ज़ख्म बन जाते हैं।

संजय की छोटी बहन शशि की गैस के असर से मौत हो गई थी। एक अन्य बहन आरती ने पहले स्वयं बहुत सहा है अब उसके बेटे के दिल में भी छेद होने की पुष्टि हो गई है। एक अन्य बहन रानी को स्वास्थ्य समस्याओं के कारण उसके पति ने छोड़ दिया है और अब वह भी यहीं रहती है।

संजय ने बताया कि जो थोड़ा बहुत मुआवज़ा मिला वह कर्ज़ चुकाने में चला गया है। आज भी आय बहुत कम है और दवाइयों व इलाज पर ही काफी खर्च हो जाता है। अन्य सब समस्याओं के साथ यह डर संजय को सता रहा है कि शायद फिर कर्ज़ा लेना पड़ेगा।

सईद खान की ख्याति एक कुशल दर्ज़ी के रूप में रही है व उनका परिवार काफी बड़ा था। गैस त्रासदी के बाद खुद स्वास्थ्य समस्याएं सहने के साथ-साथ चार बच्चों की मृत्यु देख चुके हैं। उन्होंने बताया कि सांस फूलना, आंखों व सीने में जलन महसूस होना, अधिक चलने या मेहनत का कार्य करने में

असमर्थता, पैरों में सूजन व जगह-जगह दर्द, चक्कर आना ये सारी स्वास्थ्य समस्याएं आसामान्य तौर पर उनके परिवार व आसपास के गैस पीड़ितों में देखी गई हैं।

बिल्किस बी अनेक गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं झेल चुकी हैं व बड़े ऑपरेशन करवा चुकी हैं। अब इतनी पस्त हैं कि उठना भी मुश्किल है। फेफड़े, दिल और गुर्दों की बीमारियों से ज़्यादा परेशान रही हैं। गैस त्रासदी के समय बिल्किस के चार बच्चे थे जिनमें से तीन बच्चों की मौत के दर्द से वे गुज़र चुकी हैं। चौथी बेटी नाज़मा की स्थिति भी अब चिंताजनक है। नाज़मा ने बताया कि उसे चक्कर आते हैं व कभी-कभी बेहोश हो जाती है। दर्द व जलन से वह परेशान रहती है। अब उसे बड़ी चिंता यह है कि उसके दो बच्चों, विशेषकर बेटी नाज़िया में भी गैस प्रभाव के दुष्परिणाम नज़र आ रहे हैं।

अख्तर बानो, आयु लगभग 65 वर्ष ने स्वयं तो अनेक स्वास्थ्य समस्याएं झेली ही हैं, पर अधिक दुखी वह अपने बच्चों की समस्याओं के बारे में बताते हुए होती हैं। अपनी बेटी गुड्डी की गैस त्रासदी के बाद कैंसर से पीड़ित होकर मर जाने की दर्दनाक कहानी बताते हुए वह रो पड़ी। उनके अन्य बच्चों आमना, शमशाद व रईस ने भी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं झेली हैं। शमशाद ने बताया कि उनकी सब बेटियों ने भी जीवन-भर गैस के असर से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं को झेला है। इनमें से एक बेटी शन्नो की छः वर्षीय बेटी में भी गैस के दुष्परिणाम नज़र आ रहे हैं। आमना की बेटी भी गैस जनित परेशानियों को भुगत रही है। इधर रईस के बाद उनका बेटा भी गैस से प्रभावित होने का दर्द झेल रहा है।

मोहम्मद रशीद ने कहा कि मेरा तो अब मीडिया के लोगों से बात करने का मन नहीं करता है क्योंकि वे हमसे बातचीत करके चले जाते हैं पर बाद में कुछ होता नहीं है। यह भरोसा दिलाने पर कि उनकी सही बात ज़रूर छापी जाएगी, रशीद ने बताया कि निरंतर दर्द व खांसी से परेशान रहे हैं, कभी अचानक बहुत गुस्सा आ जाता है तब खुद पर नियंत्रण नहीं रहता है। सर्जरी भी करवाई है।

मुआवज़े का पैसा बहुत अपर्याप्त रहा। जब अपने जवान बच्चों को भी गैस के दुष्परिणाम भुगतते हुए देखते हैं तो बहुत दुख होता है। सरकारी चिकित्सा तंत्र से रशीद को बहुत शिकायत है कि उसमें भ्रष्टाचार पनप रहा है व लोगों को सही इलाज नहीं मिल रहा है। वे कहते हैं कि गैस पीड़ितों के नाम पर कई लोग कमाई कर रहे हैं पर गैस पीड़ित परेशान हैं। इन बस्तियों में न पानी की सही व्यवस्था है, न सफाई की जिसके चलते लोगों में स्वास्थ्य समस्याएं और बढ़ती हैं।

अधिकतर गैस पीड़ित जिनसे बात की गई, इस बात पर सहमत थे कि यदि सभी गैस पीड़ितों को पर्याप्त पेंशन दी जाए तो हालात में सुधार आ सकता है। साथ ही उन्होंने समूचे चिकित्सा तंत्र में सुधार करने, पेयजल व सफाई की उचित व्यवस्था करने पर भी ज़ोर दिया। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 95 का हल

ब	र	सा	त		टि	टे	न	स
गु			र	ह	ट			हा
ला	ज	वं	ती		ह		पा	रा
			ब	क	री		सं	
को	शि	का		ठो		मं	ग	ल
	मे		श	र	द			
टे	रा		त		म	ल	मा	स
ल्क			पा	ल	क			मा
म	क	रं	द		ल	ल	ता	न